संगीत शिक्षण और मनोविज्ञान

डॉ. सविता उप्पल
प्राचार्य, स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज़ कालेज,रायकोट, लुधियाना

ज्ञान का समुद्र अगाध है। यह प्रकृति की देन है। परन्तु प्रकृति की एक अन्य देन मनुष्य अथवा मानव–मन का जिज्ञासु होना भी है। मानव सृष्टि के आरम्भ से ही अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण निरन्तर ज्ञान के इस समुद्र में गोते लगाकर कुछ प्राप्त करने का प्रयास करता रहा है। उसके इस प्रयत्न से ज्ञान के नये–नये आयाम सामने आते चले गये। इस तरह ज्ञान का प्रसार पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता गया। ज्ञान के आधिक्य ने इसके श्रेणीकरण की आवश्यकता को जन्म दिया। इस प्रकार अनेक ज्ञान–विज्ञानों आदि का जन्म हुआ। ज्ञान के इस अगाध समुद्र का ही एक बिन्दु मनोविज्ञान भी है।

मनोविज्ञान : सामान्य परिचय

मनोविज्ञान वह विषय है, जो व्यक्ति विशेष के तथा दूसरे मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन करता है और उसे 'क्यों और कैसे' तथ्यों से अवगत कराता है। मनोविज्ञान यह भी देखता है कि किन–किन परिस्थितियों में वह और दूसरे व्यक्ति एक विशेष प्रकार का व्यवहार करते हैं।

मनुष्यों में एक तरफ समानता और एकरूपता दिखाई देती है और दूसरी तरफ विभिन्नता और बहुरूपता। प्रश्न उठता है कि यह समानता और विभिन्नता कैसे पैदा हुई ? आज जो कुछ हम और हमारे मित्र हैं, जो विचार और भाव, आदतें और संस्कार, चरित्र और आचरण हमारा बन गया है, वह कैसे बना है ? इसका जवाब हमें मन के शास्त्र 'मनोविज्ञान' से मिलता है।'

मनोविज्ञान हमारे मानसिक व्यवहार का अध्ययन करता है। हम किन बातों पर क्यों और कैसे ध्यान देते हैं ? हमें कुछ बातें याद रहती हैं और कुछ बहुत जल्दी क्यों भूल जाती हैं ? हमारे आचार–विचार, हमारी आदतें, भाव–विचार कैसे बनते–बदलते हैं ? – ये सब मनोविज्ञान के विषय हैं। मनोविज्ञान हमारे समस्त जीवन और आचरण का अध्ययन करता है।

मनोविज्ञान का अध्ययन आत्म–परिचय और आत्म–संयम की सीढ़ी है। मनुष्य सामाजिक जीव है, वह हमेशा दूसरों से मिलकर रहता हे और काम करता है। अन्य लोगों के सहचार, सहानुभूति और सहयोग के बिना उसे जीवन में न सफलता मिलती है और न ही संतोष। मनोविज्ञान से हमें मानव स्वभाव का जो परिचय प्राप्त होता है, वह हमें दूसरों के अधिक निकट ले जाता है। हम उनके साथ व्यवहार करने में अधिक कुशल और समझदार हो जाते हें।

संगीत शिक्षण तथा मनोविज्ञान में घनिष्ठ संबंध है। मनोविज्ञान का आश्रय लिए बिना संगीत शिक्षण प्रभावी नहीं हो सकता। डा. स्किंझी तथा डा. श्री रा. नाइक आदि विद्वानों ने भी संगीत और

मनोविज्ञान के बारे में अपनी यही विचारधारा प्रस्तुत की है। इसलिए संगीत–शिक्षण प्रणाली में मनोविज्ञान की सहायता से बहुत लाभ प्राप्त हो सकता है।

मनोविज्ञान के अनुसार, विद्यार्थियों में वैयक्तिक विभिन्नता बहुत विस्तृत है। रूचि, ध्यान, समझने–सोचने तथा याद रखने की योग्यता सब में अलग–अलग होती है। जब तक अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी के इस अन्तर से परिचित न हो, वह उनकी शिक्षा में सफल नहीं हो सकता और उनका यह परिचय उसे मनोविज्ञान के अध्ययन से ही मिलता है। विद्यार्थियों की बुद्धि का स्तर और सीखने की गति अलग–अलग होती है। अतः यह आवश्यक है कि उन्हें एक साथ पढ़ाते हुए अध्यापक अपने छात्रों की वैयक्तिक सामर्थ्य को जाने।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिक्षण–प्रणाली में जो भेदोपभेद पाए जाते हैं, उनका उपयोग संगीत का अध्ययन–अध्यापन करते समय भी हो सकता है। संगीत के अध्ययन पर इन सभी घटकों का प्रभाव इस प्रकार पड़ता है–

सामान्यीकरण

मनुष्य अपने व्यवहार में विभिन्न बातों का अनुभव प्राप्त करता है। इन सभी अनुभवों की सहायता से मनुष्य उसमें युक्त किसी सिद्धान्त के आधार पर एक साधारण नियम तैयार करता है, जिसका आगे के कार्य में बड़ा लाभ होता है। इसको सामान्यीकरण कहते हैं।

संगीत की शिक्षा लेने में भी छात्र इस नियम का उपयोग करता है। वह व्यवहार में जिन विभिन्न आवाजों को सुनता है, उनमें शोरगुल, कर्कश, मधुर आदि आवाजों का समावेश होता है। इन सभी आवाजों का विश्लेषण कर उनमें से संगीतोपयुक्त नाद को अलग निकाल कर उसको सामान्यीकरण की संज्ञा दी जाती है। इस अभियान से 'मधुर आवाज' जैसे सामान्य तत्व को छोड़ दिया जाता है। इसी का उपयोग आगे चलकर स्वस्थान निर्माण करने के लिए किया जाता है।

सुगमता

मनोवैज्ञानिक घटकों में दूसरा है–सुगमता। जो क्रिया सुगम लगती है, उसे तुरन्त आत्मसात किया जा सकता है। सुगम क्रिया को सीखने में भी अधिक समय नहीं लगता। इन क्रियाओं को सीखते समय जिज्ञासा बढ़ती ही जाती है।

यही सरलता संगीत–शिक्षण प्रणाली में भी दिखाई देती है। कोई धुन, कोई काव्य–पंक्ति अथवा कोई अच्छा–सा गीत यदि श्रोताओं अथवा विद्यार्थियों को पसंद आ जाता है तो वे उसी को बार–बार गुनगुनाते हैं। इस गुनगुनाहट की वजह से उस पंक्ति की पुनरावृत्ति हो जाती है और आगे चलकर वे गीत भी इस प्रकार सीख लेते हैं। चित्रपट के संगीत निर्देशकों ने भी इसी सुगमता को आधार लिया है। इसलिए सिने–संगीत इतना लोकप्रिय बन गया है।

भौतिक घटक

छात्र एक भौतिक परिवेश–विशेष में शिक्षा ग्रहण करता है, इसमें अन्तर आ जाने से उसका क्रम टूट जाता है। शोरगुल, धूप, वर्षा, सर्दी आदि वातावरण में होने वाले अन्तर का प्रभाव अध्ययन पर पड़ता है। इसका अनुभव हम हर समय करते हैं। संगीत विद्यालय में शांति रखना अथवा सर्दी के दिनों में स्कार्फ पहनकर गाना इसी उपरोक्त कठिनाई से बचने का साधन है। साधारण रूप से हवा तेज हो या तापमान उच्च बन जाए तो वाद्य के तार उतर जाते हैं और स्वर कम–अधिक हो जाता है। खेत–खलिहान अथवा खुले मैदान में गाना हो और वही गाना बंद कमरे में हो तो इस वातावरण अथवा भौतिक घटक का परिणाम तुरन्त विदित होता है।

शारीरिक घटक

अध्ययन एक मनोशारीरिक घटना है। अध्ययन के लिए स्वस्थ मन के साथ–साथ एक स्वस्थ शरीर भी चाहिए। यदि कोई कार्य करते हुए थकान हो जाए तो उससे अध्ययन की क्षमता घटती है। विशेषकर थकावट का परिणाम कंठ संगीत में अधिक दृष्टिगत होता है। कंठ का संबंध शरीर से होने के कारण यदि शरीर थक जाए तो स्वर ठीक नहीं लगता।

सामाजिक घटक

सामाजिक घटकों में अनुकरण, प्रोत्साहन, निन्दा आदि उपघटकों का समावेश रहता है।

(अ) अनुकरणः

संगीत–शिक्षा में अनुकरण का बहुत ही महत्व है। संगीत सम्राट् तानसेन भी पहले पशुओं की नकल उतारा करता था।

(आ) प्रोत्साहनः

इस सामाजिक घटक का प्रभाव केवल संगीत के अध्ययन पर ही नहीं, वरन् किसी भी प्रकार के अध्ययन की प्रक्रिया पर पड़ता है, क्योंकि प्रोत्साहन से शेष कार्य को पूरा करने का उत्साह पैदा हो जाता है। संगीत के क्षेत्र में तो प्रोत्साहन का विशेष ही प्रभाव पड़ता है। यदि कलाकार को मंच पर गाते हुए श्रोताओं का प्रोत्साहन मिल जाए तो उसके गायन में और भी निखार आ जाता है और उसका गायन पहले से भी अधिक आत्मविश्वासपूर्ण होता है।

(इ) निन्दाः

प्रोत्साहन के साथ ही निन्दा का घटक भी महत्व रखता है–'तुम संगीत कभी नहीं सीख सकते', 'इस जन्म में संगीत तुम्हारे लिए मुश्किल है'–इस प्रकार का वाग्–ताड़न सुनकर छात्र या तो संगीत सीखना छोड़ देगा और यदि वह सचमुच संगीत सीखना चाहता है तो वह इस निन्दा की परवाह किए बिना संगीत के प्रति समर्पित रहेगा और पूरी सामर्थ्य के साथ उसके अध्ययन में प्रवृत्त रहेगा। इस प्रकार हम देखते है कि संगीत शिक्षण और मनाविज्ञान का गहरा सम्बन्ध है ।